संगीत भूषण (प्रथम खण्ड)

Sangeet Bhusan, Part-I (First Year)

तंत्रवाद्य (INSTRUMENTAL)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) संगीत के परिभाषिक शब्दों का ज्ञान-
संगीत ध्वनि, श्रुति, नाद, स्वर (विकृत और शुद्ध एवं चल और अचल), सप्तक (मन्द, मध्य, तार), थाट, राग (राग की तीन जातियां), (स्थाई, आरोही, अवरोही और संचारी, अलंकार, वादी, संवादी, अनुवादी, आरोह, अवरोह, वर्जित स्वर, मुख्यांग, तोड़ा बोल, गत, आकर्ष प्रहार (सुलट) अपकर्ष प्रहार (उलट), लय और उसके प्रकार (विलंबित, मध्य और द्रुत) , मात्रा, ताल, विभाग, सम, खाली, ठेका, आवर्तन, ठाह और दुगुन।

(२) भारतीय संगीत की दो प्रधान पद्धतियों का ज्ञान।

(३) रजाखानी और मसीदखानी गतों का विवरण।

(४) अपने वाद्ययंत्र के विभिन्न अंगों के नाम के साथ वाद्ययन्त्र का ज्ञान।

(५) भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति का ज्ञान।

(६) पाठ्यक्रम में निर्धारित ताल समूहों के ठेकों की ठाह और दुगुन लयकारी लिखनें का अभ्यास।

क्रियात्मक (Practical)

(१) अपने वाद्ययन्त्र पर आठ अलंकार, ठाह और दुगुन लय में बजानें का अभ्यास।

(२) दा, र दिर, द्राड़, दारा आदि बजानें का अभ्यास (सितार तथा सरोद यन्त्रों पर)

(३) निम्नलिखित राग समूहों में रजाखानी गत तोडों के साथ बजानें का अभ्यास। निर्धारित राग- बिलावल, यमन, काफी, भैरव, भीमपलासी, भूपाली और विहाग।

(४) स्वर विस्तार सुनकर राग पहचानने की क्षमता।

(५) निम्नलिखित ताल समूहों के ठेकों के बोल ठाह और दुगुन लय में ताली खाली दिखलाकर बोलने का अभ्यास-
दादरा, कहरवा, त्रिताल और झपताल।

संगीत भूषण, (द्वितीय खण्ड)

Sangeet Bhusan, Part-II (Second Year)

तंत्रवाद्य (INSTRUMENTAL)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) संगीत के पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान-राग और उसकी तीन जातियां आहत व अनाहत नाद, नाद की तीन विशिष्टांए, पूर्वांग व उत्तरांग राग, आश्रय राग, विवादी स्वर, वक्र स्वर, ग्रह, अंश, न्यास, गमक आलाप, तान, सूत, घसीट, खटका, मुर्की, बाज, झाला, जनजमा, जनकथाट, कम्पन।

(२) निम्नलिखित के अन्तर का अध्ययन-
(क) तान, आलाप, (ख) मसीदखानी-रजाखानी, (ग) लय ताल, (घ) राग-थाट, (ड) सूत-घसीट, (च) खटका-मुर्की (छ) मीड-कण।

(३) (क) अपने वाद्ययन्त्र का संक्षिप्त इतिहास (ख) वाद्ययन्त्र मिलाने की विधि एवं सितार में थाट परिवर्तन करने की पद्धति।

(४) अमीर खुसरो पं. भातखडे और विष्णु दिगम्बर का संगीत में योगदान।

(५) प्रथम और द्वितीय वर्षों में निर्धारित ताल समूहों के ठेके के बोल ठाह, दुगुन और चौगुन लय में लिखनें का अभ्यास।

क्रियात्मक (Practical)

(१) इस वर्ष में निर्धारित राग समूहों के आरोह-अवरोह तथा आठ अलंकार (ठाह, दुगुन और चौगुन लयों में) बजानें का अभ्यास।

(२) निम्नलिखित राग समूहों में रजाखानी गत बजानें का अभ्यास (साधारण आलाप, तोड़ा और झाला के साथ)- भैरवी, आसावरी, खमाज, देश, वृन्दावनी सारंग, मालकौंस, दुर्गा, जौनपुरी व हमीर।

(३) उपर्युक्त राग समूहों में से किन्ही दो रागों में मसीदखानी गत बजाने का अभ्यास।

(४) स्वर विस्तार सुनकर राग पहचानने की क्षमता।

(५) निम्नलिखित तालों के ठेकों के बोल ठाह, दुगुन और चौगुन लय में हाथ पर ताली-खाली दिखाकर बोलने का अभ्यास- चारताल-, सूलफांक, रूपक, तीवरा।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

संगीत भूषण पूर्ण
Sangeet Bhusan, Final (Third Year)
तंत्रवाद्य (INSTRUMENTAL)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) व्यकंटमुखी के ७२ थाटों (मेल) की रचना और एक थाट से ४८४ रागो की उत्पति।

(२) निम्नलिखित विषयों का विशेष अध्ययन-
सन्धि प्रकाश राग शुद्ध, छायालग, संकीर्ण और परमेल प्रवेशक राग, गमक और उसके प्रकार, तान और उसके विभिन्न भेद, स्वर एवं समयानुयायी रागों के तीन वर्ग रे ध कोमल युक्त राग एवं ग-नि कोमल युक्त राग, तरब, जोड़ अनुलोम एवं विलोम।

(३) तन्त्रकार के गुण और दोष।

(४) निबन्द्ध और अनिबद्व, गायन-२२ श्रुतियों के स्वरों में विभाजन (आधुनिक, प्राचीन मतानुसार) भारतीय वाद्य के विभिन्न प्रकार (तत अवनद्ध घन और सुषिर)।

(५) विष्णु दिगम्बर और भातखंडे स्वर लिपि पद्वतियों का अध्ययन एवं तुलनात्मक आलोचना।

(६) पाठयक्रम में निर्धारित ताल-समूहों के ठेकों के बोलों को ठाह, दुगुन चौगुन एवं आड़ लय में लिखनें का अभ्यास।

(७) जीवनी तथा संगीत में योगदान-शारंग देव, हरिदास स्वामी।

(८) भारतीय संगीत का इतिहास।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित राग समूहों में आलाप, तोडे और झाले के साथ रजाखानी गत बजाने का अभ्यास-

निर्धारित राग-पूर्वी, पीलू, तिलंग, कालिगड़ा, तिलक कामोद, केदार, देशकार, हमीर, कामोद एवं जयजयवन्ती।

(२) उपयुक्त राग समूहों में से किन्ही तीन रागों में मसीदखानी गत बजाना आवश्यक है।

(३) पाठयक्रम में निर्धारित राग समूहों में से निम्नलिखित किसी एक ताल में गत बजाना आवश्यक है।
चारताल, झपताल और रूपक।

(४) आलाप सुनकर राग पहचानने की क्षमता।

(५) प्रदर्शन द्वारा रागों की समानता विभिन्नता स्पष्ट करने की क्षमता।

(६) निम्नलिखित ताल समूहों के ठेकों के बोल, ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों में बोलने का अभ्यास-(ताली खाली प्रदर्शन कर)- धमार, तिलवाड़ा, दीपचन्दी, एकताल (२/३ तथा ३/२ छन्द)।

टिप्पणी- पूर्व वर्षो का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।